om-10_Page 1 and 2 18-08-2014 10:04 Page 7

भावी नई दुनिया...

पेज 12 का शेष..

रीय कार्य में समर्पित कर दिया। अपनी निर्मल, कुशाग्र बुद्धि और सत्यता की पहचान के कारण ब्रह्माकुमारी संगठन में प्रेरणा और उदाहरणमूर्त बनीं। इनकी अलौकिक शक्ति को पहचानकर प्रजापिता ब्रह्मा ने छोटी आयु की दादी प्रकाशमणि तथा अन्य कुमारियों और माताओं का संगठन बनाकर अपना सबकुछ ईश्वरीय कार्य में समर्पित किया। तब से दादी प्रकाशमणि इस संस्था में एक आदर्श ब्रह्माकुमारी तथा संस्था की स्थापना-स्तम्भ के रूप में आध्यात्मिक ज्ञान और राजयोग को प्रस्तुत करने में एक अनुपम प्रेरणास्रोत बनीं। संस्थान में समर्पित होने के बाद कुछ ही समय में उन्होंने स्वयं को एक कुशल, तेजस्विनी, तीव्रगामी पुरुषार्थी के रूप में प्रस्तुत किया और मानवीय मूल्यों से सुसज्जित प्रकाश स्तम्भ बन कर उभरीं।

द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में शिरकत की

सन् 1954 में पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने जापान में हुए द्वितीय विश्व धर्म सम्मेलन में वक्तव्य देने हेतु आपको भेजा। दादी ने थाईलैन्ड, इन्डोनेशिया, हांगकांग, सिंगापुर, श्रीलंका, मलेशिया आदि देशों में छः माह तक भ्रमण करके हज़ारों भाई-बहनों को ईश्वरीय संदेश देकर परमात्म कार्य में सहयोगी बनाया।

विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं में अग्रिम भूमिका।

दादी की दिव्य बुद्धि, वक्तृत्व कला और योग की पराकाष्ठा को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने इन्हें भारत के विभिन्न स्थानों पर ईश्वरीय सेवाओं हेतु भेजा। इनके सद्प्रयास से दिल्ली, मुम्बई, अमृतसर, कानपुर, कोलकाता, पटना, बैंगलोर आदि महानगरों में ईश्वरीय सेवाकेन्द्रों की स्थापना हुई। पांच वर्ष तक मुम्बई राजयोग केन्द्र की निदेशिका के रूप में दादी ने सैकड़ों कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किये, जिससे लाखों आत्माओं को आध्यात्मिक रूप से लाभ मिला।

1964 में इन्हें महाराष्ट्र ज़ोन की संचालिका और उसके बाद 1968 तक महाराष्ट्र, गुजरात व कर्नाटक ज़ोन की प्रभारी के रूप में कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर दादी के हाथों में।

1969 में संस्था के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने अपने देहावसान की पूर्व संध्या पर दादीजी की अदम्य साहस, निष्ठा, ईमानदारी तथा विश्व कल्याण की सेवाओं में समर्पणता को देखते हुए, अपना हाथ दादीजी के हाथ में देते हुए, अपनी सर्व-शक्तियां हस्तांतरित कर ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की बागडोर सौंपी। तब से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक वह संस्था की मुख्य प्रशासिका के रूप में कार्य करती रहीं। अध्यात्म की ज्योति लेकर दादी जी ने देश ही नहीं विदेशों में भी प्राचीन भारतीय संस्कृति, सभ्यता और राजयोग के सिद्धान्तों को लेकर उच्च जीवन शैली के लिए सभी को प्रेरित किया। दादीजी के कुशल संचालन में ईश्वरीय विश्व विद्यालय में व्यक्तित्व निर्माण की आभा इतनी तीव्र हुई कि जिसके फलस्वरूप आज देश-विदेशों में साढ़े आठ हज़ार ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक सेवाकेन्द्र स्थापित हुए और हज़ारों भाई -बहनों ने अपना जीवन ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित किया।

संयुक्त राष्ट्र संघ में उनके सान्निध्य में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की

दादी जी के नेतृत्व में समाज में शान्ति, सद्भावना, धार्मिक समरसता भ्रातृत्व प्रेम जैसे मूल्यों की स्थापना के कार्य को देखते हुए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को संयुक्त राष्ट्र संघ ने गैर सरकारी संस्था के रूप में आर्थिक एवं सामाजिक परिषद की परामर्शक सदस्यता प्रदान की व युनिसेफ़ से जोड़ा।

''दादी जी के नेतृत्व में संस्थान द्वारा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विराट रूप से चल रहे मानवीय कार्यों को देखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय को सन् 1985 में अन्तर्राष्ट्रीय 'शान्ति पदक' और दादी जी को सन् 1987 में सकारात्मक कार्यों के लिए 'शान्ति दूत सम्मान' से भी नवाजा गया। 5 राष्ट्रीय स्तर के भी पुरस्कार प्रदान किये । इसके अलावा, दादी जी को महामण्डलेश्वरों, समाजिक संस्थानों ने विभिन्न पुरस्कार एवं सम्मान चिन्ह भेंट करते हुए उनकी सेवाओं की स्तुति की ''।

'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से नवाजा।

आध्यात्मिक शक्ति एवं बहुमुखी सेवाओं को देखते हुए दादी प्रकाशमणि को 30 दिसम्बर,1992 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्व विद्यालय द्वारा राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल डॉ एम.चेन्ना रेड्डी ने 'डॉक्टरेट' की मानद उपाधि से विभूषित किया। उत्कृष्ट सामाजिक सेवाओं के लिए महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री शरद पवार ने उन्हें 'अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार - 1994' भेंट किया ।

सोलह विभिन्न वर्गो का गठन

दूरदृष्टा दादी जी ने राजयोग शिक्षा शोध संस्थान की स्थापना करते हुए विभिन्न वर्गों के सलाह प्रभागों का गठन किया। इनमें शिक्षाविद, युवा, मेडिकल, व्यवसाय, समाजसेवा, सांस्कृतिक, न्यायिक प्रशासनिक, मीडिया आदि प्रभाग शामिल हैं। इनके अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध प्रारंभ हुआ। इसी के आधार पर संस्था अध्यात्म, प्राणी मात्र को समर्थ दिशा बोध देने में सक्षम बनी। ये प्रभाग अपने-अपने क्षेत्र में विश्व बंधुत्व का बोध जगाने के लिए सक्रिय प्रयोग करते आ रहे हैं। ज्ञान-योग की तर्कसंगत वैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्तुति बुद्धिजीवियों के लिए वरदान सिद्ध हो रही है। दादी जी विभिन्न जाति, वर्ण, रंग-भेद को दूर करने हेतु विश्व के कोने से दूसरे कोने तक आध्यात्मिक चेतना की अग्रदूत बनीं। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वास, व्यसन एवं तनाव से मुक्ति के लिए अनेक अभियान चलाए। युवाओं व महिलाओं के उत्थान, सर्वांगीण ग्राम विकास के लिए आध्यात्मिक चेतना जागृत करने वाले असंख्य कार्यक्रमों का संयोजन किया।

आध्यात्मिक विभूति का मोरमुकुट दादी के सिर पर

दादी जी की आध्यात्मिक प्रतिभा से प्रभावित, विभिन्न राज्यों के राज्यपालों, मुख्यमंत्रियों और महामण्डलेश्वरों ने दादी जी को आमंत्रित करके उनके उद्बोधन से लाखों लोगों को लाभान्वित करवाया तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया। उनमें राजस्थान के राज्यपाल डॉ एम.चेन्ना रेड्डी, महाराष्ट्र के राज्यपाल सी.सुब्रमणियम, आन्ध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू, दिल्ली के मुख्यमंत्री साहिब सिंह वर्मा, ओडिशा के मुख्यमंत्री बीजू पटनायक, जानकी वल्लभ पटनायक, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल विरेन शाह आदि उल्लेखनीय हैं। महाराष्ट्र, असम, ओडिशा, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, छत्तीसगढ़ जैसे अनेक राज्यों में दादी जी को वरिष्ठ अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया।

'विश्व धर्म संसद'की मनोनीत अध्यक्षा

शिकागो में 'विश्व धर्म संसद' ने शताब्दी कार्यक्रम में मनोनीत अध्यक्षा के रूप में आमंत्रित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। सन् 2000 में जब दादी जी ईश्वरीय सेवार्थ अमेरिका गयीं, उस समय वाशिंगटन डी.सी.में स्टेट कैपिटल बिल्डिंग के सामने मेयर ने दादी जी के कर कमलों से वृक्षारोपण कर 'ओमशान्ति ट्री' नामांकित किया, साथ ही प्रतिवर्ष 10 जून को 'प्रकाशमणि दिवस' मनाने की उद्घोषणा की, जो आज भी यथावत् कायम है।

विशेष आवार्ड से सम्मानित

यूनेस्को ने दादी जी को अंतर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार संस्कृति वर्ष के दौरान पीस मेनिफेस्टो 2000 के अंतर्गत भारत व 120 अन्य देशों से साढ़े तीन करोड़ व्यक्तियों के हस्ताक्षर जुटाने पर विशेष आवार्ड से सम्मानित किया। शान्ति एवं सद्भाव के संचार के लिए दादी जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय धर्मसम्मेलन का आयोजन शान्तिवन में विभिन्न तीर्थ स्थलों से निकाली गई यात्राओं के समापन पर किया गया। इसी प्रकार अन्य प्रदेशों में भी सर्व धर्म सम्मेलन, नारी सम्मेलन एवं युवा यात्राओं का आयोजन उन्हीं की प्रेरणा का परिचायक था।

मानवीय मूल्यों से ओत-प्रोत दादी जी के निर्मल, पवित्र और प्रकाशदायी व्यक्तित्व से लाखों लोगों के जीवन में परिवर्तन आया। इनके सानिध्य में लाखों परिवार पवित्र, तनाव एवं व्यसनों से मुक्त, सुखी जीवन जीने की कला सीखकर अनेकों के लिए आदर्शमूर्त बने हैं। ऐसी आभामयी दादी को शत्-शत् नमन।

पूर्व महामहिम राष्ट्रपति प्रतिभादेवी सिंह पाटिल दादी प्रकाशमणि से आर्शावाद प्राप्त करते हुए।

दीप प्रज्जवल कर संत सम्मेन का उद्घाटन करते हुए दादी प्रकाशमणिजी।

सिरोही के राजा रधुवीर सिह को ईश्वरीय सौगात देते हुए दादी प्रकाशमणि।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी अभिनंदित करती दादी प्रकाशमणि।

पूर्व प्रधामंत्री एन आर राव दादी के साथ दीप्रज्जवलन कर समेलन का उद्घाटन करते हुए साथ में पूर्व राजस्थान के गवरनर चंना रेड्डी।

कर्नाटक के स्वामीजी दादीजी का पुष्पाहार पहनाकर समानित करते हुए।